



त्रयोदशः पाठः सुभाषितानि

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम् ॥1॥

हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥2॥

न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद् रिपुः।
व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा ॥3॥

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥4॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभागभवेत् ॥5॥

शब्दार्थः



| | | |
|-----------------------|---|---|
| पुस्तकस्था | - | पुस्तक में विद्यमान |
| परहस्तगतम् | - | दूसरों के हाथ में गया हुआ |
| कार्यकाले समुत्पन्ने | - | समय आने पर |
| श्रोत्रस्य | - | कान का/के/की |
| किं प्रयोजनम् | - | क्या मतलब/प्रयोजन |
| कश्चित् | - | कोई |
| कस्यचित् | - | किसी का |
| रिपुः | - | शत्रु |
| व्यवहारेण | - | व्यवहार के द्वारा/से |
| जायन्ते | - | होते हैं/होती हैं/बनते हैं/बनती हैं |
| तुल्यम् | - | समान |
| सर्वत्र | - | सब जगह |
| पूज्यते | - | आदर का पात्र होता है/होती है/पूजा जाता है/जाती है |
| भवन्तु (भू, लोट्) | - | बनें |
| सन्तु (अस्, लोट्) | - | हों |
| निरामयाः | - | नीरोग |
| भद्राणि | - | कल्याण को/कल्याण |
| पश्यन्तु (दृश्, लोट्) | - | देखें |
| मा कश्चित् | - | न कोई |
| दुःखभाक् | - | दुःख का भागी |
| भवेत् | - | हों |



अभ्यासः



1. पाठे दत्तानां श्लोकानां वाचनं कुरुत-
2. श्लोकांशान् यथोचितं योजयत-

क

परहस्तागतं धनम्
श्रोत्रस्य भूषणम्
न कश्चित्
विद्वत्त्वं च नृपत्वं च
मा कश्चित्

ख

कस्यचिद् रिपुः
नैव तुल्यं कदाचन
शास्त्रम्
दुःखभाग् भवेत्
न तद् धनं भवति

3. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) कार्यकाले समुत्पन्ने।
(ख) सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
(ग) व्यवहारेण मित्राणि।
(घ) विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।
(ङ) सर्वे भवन्तु सुखिनः।

4. शुद्धकथनानां समक्षम् 'आम्', अशुद्धकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

(क) पुस्तकस्था विद्या कार्यकाले विद्या भवति।

(ख) हस्तस्य भूषणं दानम्।



(ग) राजा सर्वत्र पूज्यते।

(घ) विद्वत्त्वं च नृपत्वं च तुल्यं भवति।

(ङ) सर्वे भद्राणि मा पश्यन्तु।

5. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) पुस्तकस्था विद्या कदा विद्या न भवति?

(ख) कण्ठस्य भूषणं किं भवति?

(ग) मित्राणि केन जायन्ते?

(घ) कः सर्वत्र पूज्यते?

(ङ) सर्वे कानि पश्यन्तु?

6. विलोमशब्दान् योजयत-

विद्या

रिपुः

सत्यम्

विदेशः

मित्रम्

असत्यम्

स्वदेशः

दुःखिनः

सुखिनः

अविद्या

